Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

EZK

यहेजकेल 1:1–3:27, यहेजकेल 4:1–7:27, यहेजकेल 8:1–11:25, यहेजकेल 12:1–24:27, यहेजकेल 25:1–32:32, यहेजकेल 33:1–37:28, यहेजकेल 38:1–39:29, यहेजकेल 40:1–48:35

यहेजकेल 1:1–3:27

परमेश्वर ने यहेजकेल को स्पष्ट कर दिया कि उसे काम करना है एक भविष्यवक्ता के रूप में। परमेश्वर ने इसे कई तरीकों से स्पष्ट किया। उन्होंने यहेजकेल को दर्शन दिये। उन्होंने यहेजकेल से संदेशों में बात की। उन्होंने यहेजकेल को एक पुस्तक खाने के लिए दी। प्रभु की आत्मा यहेजकेल में आई। यह पवित्र आत्मा का एक और नाम है। इन सभी चीजों ने स्पष्ट कर दिया कि यहेजकेल को परमेश्वर द्वारा अलग किया गया था। परमेश्वर ने यहेजकेल को बाबुल में बंधवाई में रह रहे यहूदियों को परमेश्वर के संदेश देने के लिए नियुक्त किया। परमेश्वर ने यहेजकेल को चेतावनी दी कि लोग हठिले थे। यहेजकेल को उन्हें परमेश्वर के संदेश देने थे, भले ही वे उन्हें सुनना नहीं चाहते थे। परमेश्वर नहीं चाहते थे कि यहेजकेल उन लोगों से डरें जिनसे वह बात कर रहे थे। यहेजकेल का पहला दर्शन परमेश्वर की उपस्थिति और महिमा का था। यहेजकेल के लिए यह पहला दर्शन समझना कठिन था कि उन्होंने क्या देखा। यह इसलिए था क्योंकि उन्हें स्वर्गीय दुनिया में कुछ देखने की अनुमति दी गई थी। उन्होंने इसे समझने के लिए शब्दों और चित्रों का उपयोग करके वर्णन करने की कोशिश की। उन्होंने देखा कि परमेश्वर एक सिंहासन पर बैठे थे जिसे चार जीवित प्राणियों द्वारा चलाया जा रहा था। अध्याय 10 में यहेजकेल ने इन चार जीवित प्राणियों को करूब कहा। परमेश्वर यहेजकेल को धातु और आग से बने मानव की तरह दिखे। यहेजकेल ने परमेश्वर के चारों ओर प्रकाश और एक इंद्रधनुष देखा। परमेश्वर ने यहेजकेल को मनुष्य का पुत्र कहा। यह इस बारे में बात करने का एक तरीका था कि कैसे यहेजकेल एक आत्मिक प्राणी नहीं था। परमेश्वर की आत्मा ने यहेजकेल को वह सब करने और देखने में सक्षम बनाया जो वह सामान्य रूप से नहीं कर सकते थे। लेकिन यहेजकेल पूरे समय एक मनुष्य ही रहा। भविष्यवक्ता के रूप में उसके काम में यहेजकेल का शरीर बहुत महत्वपूर्ण था। इसका एक उदाहरण यह था कि कैसे यहेजकेल ने परमेश्वर के संदेशों वाली एक पुस्तक खा ली। परमेश्वर के संदेशों ने उसका पेट भर दिया। एक और उदाहरण यह था कि कुछ समय के लिए यहेजकेल अपना मुंह नहीं खोल पाएंगे। परमेश्वर यहूदियों के लिए एक संकेत के रूप में यहेजकेल का मुँह बंद या खोल देंगे। यह इस बात का संकेत था कि कैसे उन्होंने परमेश्वर की बात सुनने और उसकी आज्ञा मानने से इनकार कर दिया।

यहेजकेल 4:1–7:27

यहेजकेल ने कई तरीकों से लोगों को परमेश्वर के न्याय के संदेश पहुँचाए। उसने यरूशलेम शहर का एक नमूना बनाया और उस पर हमला करने का नाटक किया। वह कुछ विशेष तरीकों से जमीन पर लेट गया। उसने कुछ विशेष भोजन खाया और उसे एक विशेष तरीके से पकाया। उसने तलवार से अपने बाल और दाढ़ी मुंडवाई। उसने कटे हुए बालों के साथ कुछ विशेष काम किए। उसने ताली बजाई, अपने पैर पटके और कुछ विशेष शब्द चिल्लाए। इन सभी को भविष्यवाणी की क्रियाएँ माना जाता था। यहेजकेल ने इन्हें यहूदी लोगों को कुछ समझाने में मदद करने के लिए किया। परमेश्वर बाबेल की सेनाओं को यरूशलेम को नष्ट करने की अनुमति देने वाले थे। दक्षिणी राज्य के लोग भयंकर कष्ट सहेंगे। कई भूख से मर जाएंगे और कई मारे जाएंगे। कई अन्य राष्ट्रों में बिखर जाएंगे। ये कुछ वाचा शाप थे। इस प्रकार परमेश्वर दक्षिणी राज्य के खिलाफ न्याय लाएगा। परमेश्वर चाहते थे कि बाबेल में रहने वाले यहूदी विश्वास करें कि वह यह न्याय लाएंगे। वह यह भी चाहते थे कि वे समझें कि ऐसा क्यों होगा। ऐसा इसलिए था क्योंकि परमेश्वर के लोग सीनै पहाड़ वाचा के प्रति वफादार नहीं थे। उन्होंने केवल परमेश्वर की आराधना करने के बजाय झूठे देवताओं की आराधना की। अपने पड़ोसियों से प्रेम करने की बजाय उन्होंने एक-दूसरे के खिलाफ पाप किया और हत्या की। वे अभिमान से भरे हुए थे। उन्हें परमेश्वर से ज़्यादा पैसे और दौलत की परवाह थी। परमेश्वर उन्हें बुरे काम करते रहने की इजाज़त नहीं देगा।

यहेजकेल 8:1–11:25

यहेजकेल ने कहा कि प्रभु की शक्ति उनके ऊपर आई। परमेश्वर यहेजकेल को आग और चमकती धातु की एक मानव आकृति की तरह दिखाई दिया।। फिर आत्मा ने यहेजकेल को पृथ्वी और स्वर्ग के बीच उठा लिया। यहेजकेल ने इस तरह से बताया कि दर्शन का अनुभव कैसा था। इस दर्शन में वह सब कुछ शामिल था जो यहेजकेल ने अध्याय 11 में दर्ज किया था। जो बातें उसने देखीं, वे यरूशलेम के मंदिर में हो रही थीं। यहेजकेल ने देखा कि पुरुष, महिलाएं और बुजुर्ग झूठे देवताओं की आराधना कर रहे थे। उन्होंने शहर के प्रधानों को बुरे योजनाएं बनाते और खराब सलाह देते देखा। यहेजकेल ने उनके खिलाफ परमेश्वर के शब्द बोले। इन शब्दों में उन प्रधानों में से एक को मारने की शक्ति थी। यहेजकेल ने यह देखकर परमेश्वर से प्रार्थना की। उसने तब भी प्रार्थना की जब यरूशलेम में लोग मारे जा रहे थे। यहेजकेल नहीं चाहता था कि परमेश्वर उन सभी इस्राएलियों को नष्ट कर दें जो अभी भी जीवित थे। लेकिन परमेश्वर ने स्पष्ट किया कि ये लोग बुरे कर्म करना चुन रहे थे। वे अपनी कार्यों पर न तो दुखी थे और न ही शर्मिंदा थे। वे रुकने वाले नहीं थे। इसलिए परमेश्वर ने उन्हें रोकने का निर्णय लिया। इन लोगों ने झूठे देवताओं की आराधना करके मंदिर को अशुद्ध बना दिया था। परमेश्वर पवित्र हैं और उनके पास कोई भी बुरी या अशुद्ध चीज नहीं हो सकती। परमेश्वर ने कहा था कि उनका नाम मंदिर और यरूशलेम में हमेशा के लिए रहेगा (2 इतिहास 33:7)। लेकिन उन्होंने यह भी चेतावनी दी थी कि वह मंदिर से मुंह मोड़ लेंगे (1 राजाओं 9:7)। इसका मतलब था कि परमेश्वर अब वहाँ अपनी उपस्थिति प्रकट नहीं करेंगे। वह ऐसा तब करेंगे जब उनके लोग उनके प्रति वफादार नहीं होंगे। यहेजकेल ने इस दर्शन में ऐसा होते देखा। परमेश्वर की महिमा मंदिर के द्वार तक चली गई। फिर वह मंदिर और यरूशलेम को छोड़कर चली गई। यह एक संकेत था कि अपने लोगों के साथ परमेश्वर की वाचा कुछ समय के लिए टूट गई थी।। मूसा ने इसराएलियों को चेतावनी दी थी कि ऐसा होगा (व्यवस्थाविवरण 31:15–18) । परमेश्वर की महिमा ने मंदिर को छोड़ दिया लेकिन यहेजकेल ने इसे बाबेल में देखा। इससे यह स्पष्ट हुआ कि परमेश्वर केवल इस्राएल की भूमि के शासक नहीं थे। बाबेल में यहूदी मंदिर से बहुत दूर थे। लेकिन परमेश्वर ने कहा कि वह उनका मंदिर था। इसका मतलब था कि वे जहाँ कहीं भी हों, परमेश्वर के साथ रह सकते थे और उसकी आराधना कर सकते थे। यह यहेजकेल द्वारा साझा किए गए आशा के संदेश का हिस्सा था। परमेश्वर ने वादा किया कि वह अपने लोगों को बंधवाई से वापस लाएंगे। उन्होंने वादा किया कि वे सीनै पहाड़ की वाचा के प्रति वफादार रहेंगे। वे हठीले होने के बजाय परमेश्वर की आज्ञा मानेंगे। वे ऐसा इसलिए कर पाएँगे क्योंकि परमेश्वर उनके दिलों को बदल देंगे।

यहेजकेल 12:1–24:27

यहेजकेल ने बाबेल में यहूदियों के बीच परमेश्वर के न्याय के संदेशों को साझा करना जारी रखा। उनकी भविष्यवाणी की कार्यों में यात्रा के लिए झोली तैयार करना और खाते समय कांपना शामिल था। उन्होंने कराहते हुए अपनी छाती पीटी और बाबेल के राजा के लिए एक नक्शा भी बनाया। अपनी पत्नी की मृत्यु के समय, हालांकि वह उन्हें बहुत प्यार करते थे, उन्होंने आंसू नहीं बहाए। कुछ संदेश उन्होंने लोगों को स्पष्ट रूप से बताए। उन्होंने इस्राएल का पूरा इतिहास संक्षेप में बताया। उन्होंने पुरुषों और महिलाओं के खिलाफ बोला जो झूठे भविष्यवक्ता थे। उन्होंने उन प्राचीनों के खिलाफ बोला जिन्होंने झूठे देवताओं की आराधना करते हुए भी परमेश्वर से सलाह मांगी। कुछ लोगों ने परमेश्वर पर अन्याय करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि परमेश्वर ने उन्हें उन पापों के लिए दंडित किया जो उन्होंने नहीं किए थे। वे पाप उनके माता-पिता और उनके लोगों द्वारा बहुत पहले किए गए थे। यहेजकेल ने समझाया कि परमेश्वर हमेशा और केवल वही करते हैं जो न्यायपूर्ण होता है। परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को उनके अपने चुनावों के लिए जिम्मेदार ठहराता है। यहेजकेल ने इस्राएल के राजकुमारों के बारे में एक दुखद गीत गाया। फिर उन्होंने राजा सिदकिय्याह के बारे में स्पष्ट रूप से बोला कि वह एक अपवित्र और दुष्ट राजकुमार था। कुछ यहूदियों ने कहा कि यहेजकेल द्वारा घोषित न्याय बहुत लंबे समय तक नहीं आएगा। उन्होंने विश्वास नहीं किया कि परमेश्वर यरूशलेम को नष्ट होने देंगे। उन्हें विश्वास नहीं था कि वे इस तरह से न्याय किए जाने के योग्य हैं। उन्हें नहीं लगता था कि वे बुरे तरीकों से जी रहे थे जिन्हें रोका जाना चाहिए। और उन्हें भरोसा था कि अन्य राष्ट्र यरूशलेम को बाबेल की सेनाओं से बचा लेंगे। परमेश्वर ने कहा कि समय आ गया है कि वह कार्य करे। इससे यह स्पष्ट हो गया कि कोई भी उसके न्याय को आने से नहीं रोक सकता। यहेजकेल ने परमेश्वर के कुछ संदेश कविताओं के रूप में और अन्य कहानियों के रूप में साझा किए। इन कहानियों में परमेश्वर ने अपने लोगों की तुलना विभिन्न चीजों से की। उन्होंने उनकी तुलना एक बेकार बेल से की जो आग में जला दी गई थी। उन्होंने उनकी तुलना एक बेल से की जो गलत दिशा में बढ़ी। उन्होंने उनकी तुलना उस मैल से की जो धातुओं को चांदी बनाने के लिए जलाने पर पीछे रह जाता है। वे एक बर्तन में मांस की तरह थे जिसे गर्म आग पर पकाया जाएगा। ये दक्षिणी राज्य के पापों को दर्शाने के तरीके थे। परमेश्वर ने अपने लोगों की तुलना बच्ची से की जिसे परमेश्वर ने मरूभूमि से बचाया था। लेकिन वह बड़ी होकर परमेश्वर के प्रति एक विश्वासघाती पत्नी बन गई। परमेश्वर ने यरूशलेम और सामरिया की तुलना दो बहनों से की जो परमेश्वर की थीं। लेकिन उन्होंने वेश्याओं की तरह व्यवहार किया। इन कहानियों का मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर ने किसी के साथ शारीरिक संबंध बनाए। परमेश्वर ने विवाह का उपयोग विश्वासयोग्य और वचनबद्ध होने के बारे में बात करने के लिए किया। परमेश्वर ने इस्राएलियों का परमेश्वर

बनने के लिए खुद को हमेशा के लिए वचनबद्ध किया था। उन्होंने यह सीनै पहाड़ वाचा में किया था। इस्राएलियों ने मूसा की व्यवस्था का ईमानदारी से पालन करने का संकल्प लिया था। इसका सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा केवल परमेश्वर की आराधना और सेवा करना था। लेकिन उत्तरी राज्य और दक्षिणी राज्य के लोगों ने ऐसा नहीं किया था। उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा नहीं किया कि वह उन्हें शांति, आराम और सुरक्षा देगा। इसके बजाय उन्होंने अश्शूर, मिस्र और बाबुल जैसे देशों की शासनो पर भरोसा किया कि वे उनकी रक्षा करेंगे। उन्होंने अपने आस-पास के देशों की प्रथाओं का पालन किया। उन्होंने दूसरे देशों के झूठे देवताओं की आराधना की। इस कारण वे जरूरतमंद लोगों के साथ बुरा व्यवहार करने लगे। इसने उन्हें वे अधिक से अधिक धन-संपत्ति की चाहत रखने के लिए प्रेरित किया। इसने उन्हें वे झूठे देवताओं को बच्चों की बलि चढ़ाने के लिए प्रेरित किया। ये सभी चीजें परमेश्वर की व्यवस्थाओं के खिलाफ थीं। ये वे तरीके थे जिनसे परमेश्वर के लोग उसके प्रति अविश्वासी हो गए थे।

यहेजकेल 25:1–32:32

यहेजकेल की पुस्तक के बीच में अन्य राष्ट्रों के बारे में न्याय के संदेश आते हैं। ये संदेश अम्मोन, मोआब, एदोम और पलिश्तियों के बारे में थे। ये मिस्र, सोर और सिदोन के बारे में भी थे। ये संदेश यहेजकेल की पुस्तक को दो भागों में बाँटते हैं। पहले भाग में यहेजकेल की भविष्यवाणियाँ यह घोषणा करती हैं कि यरूशलेम पूरी तरह से नष्ट हो जाएगा। दूसरे भाग में यहेजकेल की भविष्यवाणियाँ यरूशलेम के नष्ट होने के बाद की हैं। यहेजकेल ने बाबेल में यहूदियों को अन्य राष्ट्रों के बारे में न्याय के संदेश सुनाए। इन संदेशों ने यहूदियों को परमेश्वर, न्याय और अन्य राष्ट्रों के बारे में कई सबक सिखाए। एक सबक यह था कि दक्षिणी राज्य ही एकमात्र राष्ट्र नहीं था जिसके खिलाफ परमेश्वर न्याय लाए। परमेश्वर ने अन्य राष्ट्रों की शासनो और लोगों का न्याय इस आधार पर किया कि उन्होंने दूसरों के साथ कैसा व्यवहार किया। अम्मोन और मोआब को दक्षिणी राज्य में मुसीबत आने पर खुश होने के लिए दंडित किया गया। एदोम और पलिश्तियों को यहूदा से नफरत करने और दक्षिणी राज्य के साथ बुरा व्यवहार करने के लिए दंडित किया गया। सोर को उसके बेईमान व्यापार के व्यवहार के लिए दंडित किया गया। एक और सबक यह था कि किसी भी देश का शासन या सेना यरूशलेम को परमेश्वर के न्याय से नहीं बचा सकती थी। दक्षिणी राज्य के प्रधानों ने मिस्र के साथ एक समझौता किया था। उन्होंने मिस्र पर भरोसा किया कि वह उन्हें बचा लेगा। लेकिन मिस्र को भी बाबुल द्वारा नष्ट कर दिया जाएगा। एक और सबक यह था कि परमेश्वर ने राष्ट्रों और राजाओं का उपयोग अपने उपकरणों के रूप में किया। नबूकदनेस्सर चाहता था कि बाबेल की सरकार शक्तिशाली और धनी हो। इसलिए उसने कई अन्य राष्ट्रों पर नियंत्रण पाने के लिए युद्ध लड़े। साथ ही, परमेश्वर ने इन घटनाओं का उपयोग अपने उद्देश्यों के लिए किया। उसने उन्हें उन राष्ट्रों का अंत करने के लिए उपयोग किया जिन्होंने बुरे काम किए थे। इसने एक और सबक सिखाया। परमेश्वर का सभी मानव शासकों पर अधिकार है। फिर भी इन राष्ट्रों के कुछ मानव शासकों ने यह नहीं माना कि यह सच है। परमेश्वर ने इसके बारे में एक कहानी बताई। उसने मिस्र की तुलना एक देवदार के पेड़ से की जो मजबूत, ऊँचा और सुंदर था। पेड़ भी बहुत अभिमानी और बुरा था। परमेश्वर ने बाबेलियों को पेड़ काटने के लिए कहा। परमेश्वर ने कहा कि पेड़ इतने ऊँचे नहीं बढ़ने चाहिए कि वे अभिमानी हो जाएं। इसका मतलब था कि शासकों को विनम्र होना चाहिए और याद रखना चाहिए कि वे देवता नहीं हैं। सोर के राजा ने दावा किया था कि वह एक देवता है। शासकों को याद रखना चाहिए कि वे मानव हैं जो अन्य सभी मनुष्यों की तरह मरेंगे। केवल परमेश्वर ही प्रभु और राजा है।

यहेजकेल 33:1–37:28

परमेश्वर ने यहेजकेल को भविष्यवक्ता नियुक्त करने के बाद, यहेजकेल को बोलने से रोक दिया। यहेजकेल को केवल परमेश्वर के संदेश साझा करते समय बोलना था। परमेश्वर ने यहेजकेल को महत्वपूर्ण समाचार मिलने के बाद फिर से सामान्य रूप से बात करने की अनुमति दी। वह समाचार सात साल बाद आया। यह समाचार यह था कि यरूशलेम को बाबेल ने नष्ट कर दिया था। उन सात सालों के दौरान यहेजकेल ने बाबेल में यहूदियों के साथ ईमानदारी से परमेश्वर के संदेशों को साझा किया था। उन्होंने उन्हें अपने तरीके बदलने की लिए प्रेरित करने की कोशिश की थी। यहूदियों ने आखिरकार पहचान लिया था कि उन्होंने परमेश्वर के खिलाफ पाप किया था। परन्तु यहेजकेल ने उन्हें जो सिखाया, उस पर उन्होंने अमल नहीं किया। उन्होंने परमेश्वर से प्रेम करने की बात की। लेकिन उनके कार्यों ने दिखाया कि वे पूरे दिल से परमेश्वर की सेवा नहीं करते थे। परमेश्वर ने इसे परमेश्वर के नाम के साथ ऐसा व्यवहार करना बताया मानो वह पवित्र न हो। यह स्पष्ट था कि परमेश्वर के लोग उनके साथ की गई वाचा के प्रति वफादार नहीं रहने वाले थे। इसलिए परमेश्वर ने यहेजकेल अध्याय 16 में घोषित की गई नई वाचा के बारे में बताया। परमेश्वर इस नई वाचा को अपने पवित्र नाम के सम्मान के लिए बनाएंगे। वह चाहते थे कि सभी लोग हर जगह जानें कि वह पवित्र प्रभु और राजा हैं। परमेश्वर ने इस्राएल के साथ एक नई वाचा बनाकर इसे सभी राष्ट्रों के लिए स्पष्ट करना चुना। नई वाचा परमेश्वर की आत्मा के उनके लोगों के अंदर होने पर आधारित थी। इससे उनके दिल बदल जाएंगे। वे अब हठी नहीं रहेंगे बल्कि परमेश्वर की आज्ञा मानना चाहेंगे। परमेश्वर ने अपने लोगों को उनकी सारी अशुद्धियों से बचाने

का वादा किया। वह उन्हें उनके सभी पापों से शुद्ध करेंगे। इसका मतलब यह था कि वह उन्हें पाप की उस शक्ति से बचाएगा जो उनके ऊपर थी। वह उन्हें क्षमा करेंगे और उन्हें उसकी आज्ञा मानने के लिए सक्षम बनाएंगे। नई वाचा में वाचा की आशीष शामिल थी । ये सीनै पहाड़ वाचा के आशीष से भी अधिक महान थी । इनमें शांति, भोजन, भूमि और सुरक्षा से कहीं अधिक शामिल थे। इनमें दाऊद की वंशावली से एक अगुवा शामिल था। यह व्यक्ति एक अच्छा और विश्वासयोग्य चरवाहा होगा। वह उत्तरी राज्य और दक्षिणी राज्य पर एक राष्ट्र के रूप में फिर से शासन करेगा। परमेश्वर स्वयं अपने लोगों के साथ रहेंगे और इस्राएल को पवित्र बनाएंगे। यह हमेशा के लिए रहेगा। सूखी हड्डियों में आत्मा का फूंकना नए जीवन की तस्वीर थी। यह दर्शाता है कि परमेश्वर के लोग बँधुआई के बाद फिर से अपनी भूमि में रहेंगे। यह नए वाचा में उनके पास होने वाले नए जीवन की भी तस्वीर थी। परमेश्वर के लोगों के पास नया जीवन होगा क्योंकि परमेश्वर की आत्मा उनमें होगी। इन संदेशों में दिए गए कुछ वादे यहूदियों के बँधुआई से लौटने के बाद पूरे हुए। यहूदियों को समझ में आ गया कि यहेजकेल की कुछ भविष्यवाणियाँ भविष्य में सच होंगी। ऐसा तब होगा जब मसीहा आएगा। नए नियम के लेखकों ने दिखाया कि यीशु मसीहा हैं। उन्होंने नई वाचा को प्रभावी बनाया।

यहेजकेल 38:1–39:29

इन अध्यायों में न्याय के संदेश प्रलयकारी लेखन का एक उदाहरण हैं। यहेजकेल ने न्याय का वर्णन करने के लिए शक्तिशाली और डरावनी तस्वीरों और संकेतों का उपयोग किया। न्याय उन राष्ट्रों के खिलाफ था जिन्होंने बुरे योजनाएँ बनाई थीं। वे इस्राएल पर हमला करेंगे, भले ही इस्राएल ने कुछ भी गलत नहीं किया था। साथ ही, परमेश्वर ही वह था जिसने इन राष्ट्रों को लड़ने के लिए बाहर निकाला। उसने यह सब राष्ट्रों को दिखाने के लिए किया कि वह कौन है। परमेश्वर इस्राएल में पवित्र है। वह पूरे विश्व का प्रभु और राजा है और सभी शासकों पर उसका अधिकार है। युद्ध के बाद, भूमि को सभी शवों से साफ़ कर दिया जाएगा। सभी हथियार जला दिए जाएँगे। इन संदेशों ने यहेजकेल द्वारा बोले गए लोगों को भविष्य के लिए आशा दी। वे अभी भी बँधुआई में रह रहे थे। लेकिन एक दिन न्याय का समय समाप्त हो जाएगा। परमेश्वर उन पर अपनी आत्मा उंडेलेंगे। यह वर्णन करता है कि वे परमेश्वर के कितने करीब होंगे। परमेश्वर उन्हें अपना कोमल प्रेम दिखाएंगे।

यहेजकेल 40:1–48:35

यहेजकेल का अंतिम दर्शन लगभग 25 वर्षों तक बाबेल में रहने के बाद हुआ। इस दर्शन में वह सब कुछ शामिल था जो यहेजकेल ने अध्याय 48 के अंत तक दर्ज किया था। यरूशलेम पहले ही नष्ट हो चुका था और मंदिर जल चुका था। यह दर्शन शहर और मंदिर को फिर से नया बनाने के बारे में था। फिर उनके आस-पास की दुनिया नई बन जाएगी। इस तरह यह दर्शन अध्याय 37 में सूखी हड्डियों की कहानी जैसा था। उस कहानी में परमेश्वर के लोग मर चुके थे। उसने अपनी आत्मा उनमें डालकर उन्हें नया जीवन दिया। इस दर्शन में परमेश्वर ने यरूशलेम और मंदिर को नया जीवन दिया। फिर वहां से नया जीवन दुनिया में फैल गया। नया जीवन इसलिए आया क्योंकि परमेश्वर की महिमा मंदिर में लौट आई। इसका मतलब था कि परमेश्वर वहां से एकमात्र परमेश्वर और राजा के रूप में शासन करते थे। परमेश्वर ने मंदिर को अपना सिंहासन कहा और वहां सदा के लिए रहने का वादा किया। यहेजकेल ने ध्यानपूर्वक दर्ज किया कि मंदिर के कितने हिस्से कितने लंबे, चौड़े और ऊँचे थे। उसने राष्ट्र की सीमाओं का वर्णन किया। उसने वर्णन किया कि इस्राएल की 12 गोत्रों में से प्रत्येक को कितनी भूमि मिली। उसने बलिदानों, त्योहारों और मंदिर की देखभाल के लिए नियमों को सावधानीपूर्वक दर्ज किया। उसने याजकों और राजकुमारों के लिए नियमों का वर्णन किया। इन सावधानीपूर्वक बनाए गए अभिलेखों में यहोशू और जरुब्बाबेल द्वारा फिर से बनाए गए मंदिर का वर्णन नहीं किया गया। उन्होंने महान हेरोदेस द्वारा बनाए गए मंदिर का वर्णन नहीं किया। उन्होंने बँधुआई के बाद की भूमि और लोगों का वर्णन नहीं किया। ये सावधानीपूर्वक लिखे गए अभिलेख संकेत थे। ये संकेत थे कि परमेश्वर अपने लोगों से क्या अपेक्षा करता है। परमेश्वर को उम्मीद थी कि उसके लोग उसके नाम को पवित्र मानेंगे। इसका मतलब था कि वे सिर्फ़ उसकी आराधना करेंगे और पूरी तरह से उसकी आज्ञा मानेंगे। इससे वे पूरी तरह से उसके लोग बन सकेंगे। इससे वह पूरी तरह से उनका परमेश्वर बन सकेगा। परमेश्वर हमेशा से यही चाहते थे और इसीलिए उन्होंने उनके साथ वाचा बाँधी। यहेजकेल के सावधानीपूर्वक लिखे गए अभिलेख भी इस बात के संकेत थे कि परमेश्वर ने पृथ्वी पर क्या करने की योजना बनाई थी। उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब से जो वादा किया था, उसे पूरा करने की योजना बनाई। वह उनकी वंशावली का उपयोग पृथ्वी पर सभी राष्ट्रों को आशीष देने के लिए करेंगे। दर्शन में, इस्राएल के सभी 12 गोत्रों को भूमि प्राप्त हुई। उन बाहरी लोगों को भी जो उनके साथ शामिल हो गए थे। वे सभी मिलकर उन सभी लोगों का संकेत थे जो परमेश्वर के प्रति प्रतिबद्ध थे। दर्शन में एक नदी मंदिर से बहकर मृत सागर तक जाती थी। यहेजकेल जानता था कि यह क्षेत्र एक रेगिस्तान था और मृत सागर में कोई जीव नहीं रहते थे। लेकिन नदी ने इसे एक बगीचे जैसा क्षेत्र बना दिया। वहाँ बहुत सी मछलियाँ और जीव-जंतु थे और बहुत से फलदार वृक्ष थे। वृक्षों ने लोगों के शरीर को स्वस्थ करने के लिए भोजन के लिए फल और पत्तियाँ प्रदान कीं। वे जीवन लेकर आए और जीवन के वृक्ष की तरह थे। नदी यरूशलेम से बहती थी। इस नदी का पानी जीवन लेकर आया। यह जीवित जल था। बहती हुई नदी

यहेजकेल *40:1–48:35*

कुछ ऐसी थी जैसा कि यशायाह ने वर्णन किया था। यशायाह ने कहा कि परमेश्वर का संदेश यरूशलेम से बाहर जाएगा (यशायाह 2:3)। यह संदेश इस बारे में ज्ञान था कि परमेश्वर कौन है और वह लोगों से कैसे जीने की अपेक्षा करता है। यह यरूशलेम से बाहर गया क्योंकि परमेश्वर के लोगों ने संदेश फैलाया। उन्होंने इसे याजकों के राज्य और एक पवित्र राष्ट्र के रूप में जीकर फैलाया। यशायाह की भविष्यवाणियों ने सभी राष्ट्रों के लोगों के इस संदेश को सीखने के बारे में बात की। यहेजकेल के दर्शन में नदी इस संदेश का संकेत थी। यह परमेश्वर को जानने से मिलने वाले आशीष और जीवन का संकेत था। आशीष और जीवन सभी राष्ट्रों के लिए थे। आशीष और जीवन यरूशलेम से बाहर बहते थे क्योंकि परमेश्वर वहां उपस्थित था। यहेजकेल के दर्शन में नए यरूशलेम शहर का नाम प्रभु वहां है था। सैकड़ों साल बाद प्रकाशितवाक्य 21–22 में दर्ज यूहन्ना के दर्शन यहेजकेल के दर्शन जैसा था। उन्होंने दिखाया कि यहेजकेल का दर्शन कब सच होगा। यह तब होगा जब परमेश्वर नए सृजन में एक नया स्वर्ग और नई पृथ्वी बनाएगा।